International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(7): 81-83

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(7): 81-83
© 2015IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 15-09-2015
Accepted: 19-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि प्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि प्र

साहित्य और भाषा विज्ञान

डॉ. शिवदत्त शर्मा

साहित्य और भाषा विज्ञान का चोली दामन का साथ हे। भाषा विज्ञान वास्तव में भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। इस वैज्ञानिक अध्ययन में आम तौर पर जीवित भाषाओं का ही अध्ययन होता है परन्तु अगर मृत एवं प्राचीनतमभाषाओं की सम्पूर्ण सामग्री उपलब्ध हो तो इनका भी अध्ययन सम्भव है। प्राचीन काल में संस्कृत भाषा का वैज्ञानिकअध्ययन निश्चित, शब्दानुशासन, प्रतिशाख्य, व्याकरण द्वारा भी होता रहा हे। इस तरह पाणीनि को विश्व का प्राचीनतम भाषा वैज्ञानिक कहा जा सकता है। अब तक भाषा का जो वैज्ञानिक अध्ययन हुआ है, उसका इतिहास केवल दो शताब्दियों का ही है। वैज्ञानिकों ने इसे भिन्न भिन्न नामों से परिभाषित किया हैं। भाषा विज्ञान की परिभाषा को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद हैं। भाषा विज्ञान की निम्नलिखित परिभाषाएं दी गईं हैं।

इन परिभाषाओं को हम दो भागों में बांट सकते हैं। 1– भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएं। 2– पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा दी गई परिभाषाएं।

1. भारतीय विद्वानों की परिभाषाएं –

1. डॉ श्याम सुन्दर दास– इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ भाषाविज्ञान में इस तरह परिभाषा दी है।
   भाषा विज्ञान उस शास्त्र को कहते हैं जिसमें भाषा मात्र के भिन्न भिन्न अंगों और स्वरूपों का विवेचन तथा निरूपण किया जाता है।1
2. डॉ देवी शंकर द्विवेदी– इन्होंने अपने ग्रंथ भाषा और भाषिकी में भाषा विज्ञान के लिए भाषिकी शब्द का प्रयोग किया है। उनके अनुसार भाषाविज्ञान की परिभाषा इस प्रकार है–
   भाषा विज्ञान को अर्थात् भाषा के विज्ञान को भाषिकी कहा जाता है। भाषिकी में भाषा का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है।2
3. डॉ भोला नाथ तिवारी ने अपने ग्रंथ भाषाविज्ञान में लिखा है–
   भाषा विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें भाषा अथवा भाषाओं का एक कालिक, बहुकालिक, तुलनात्मक, व्यतिरेकी अथवा अनुप्रायोगिक अध्ययन विश्लेषण तथा तद् विषयक सिद्धांतों का निर्धारण किया जाता हैं।3
4. डॉ मंगल देव शास्त्री ने अपने ग्रंथ तुलनात्मक भाषा शास्त्र में भाषा विज्ञान की परिभाषा इस प्रकार दी है–
   भाषा विज्ञान उस विज्ञान को कहते हैं, जिसमें सामान्य रूप से मानवीय भाषा का, किसी विशेष भाषा की रचना और इतिहास का और अन्ततः भाषाओं या बोलियों के वर्गो की पारस्परिक समानताओं और विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।4
5. डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने अपने ग्रंथ भाषा विज्ञान के सिद्धान्त और हिन्दी भाषा में भाषा विज्ञान की परिभाषा देते हुए लिखा है–
   भाषा विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें भाषा एवं भाषा तत्वों का ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक आधार पर अध्ययन किया जाता है।5

पश्चात्य विद्वानों की परिभाषाएं भी इसी तरह इसी ओर इशारा करतीं हैं कि जिस शास्त्र में एक या उस से अधिक भाषाओं का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है उसे भाषा विज्ञान कहते हैं।
साहित्य की परिभाषा में भी विद्वानों ने अलग अलग मत व्यक्त किए हैं।
संस्कृत साहित्य के आचार्य भामह के अनुसार शब्द और अर्थ के सहचर्य को काव्य अर्थात् साहित्य कहते हैं।
आचार्य विश्वानाथ के अनुसार रसात्मक वाक्य ही काव्य है।6
पंडित राज जगन्नाथ ने रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाले शब्द को काव्य माना है।
डॉ नगेन्द्र ने साहित्य की परिभाषा देते हुए लिखा है–उदात्त भावों की निश्चल अभिव्यक्ति का नाम कविता है।
इस तरह अनेक विद्वानों की भाषाओं के सार से यह प्रतिभासित होता है कि जो भी रचना चाहे वह

गद्यात्मक हो अथवा पद्यात्मक अगर वह पाठक और श्रोता को भावात्मक आनन्द प्रदान करने में समर्थ है तो उसे हम साहित्य कहते हैं। प्राचीन काल में काव्य की बडी व्यापक परिभाषा मिलती है। परन्तु आधुनिक काल में काव्य शब्द केवल पद्य बद्ध रचना तक ही सीमित हो गया और साहित्य के स्वरूप में समाज हित की व्यापक भावना समाहित हो गई है। साहित्य में अब आधुनिक सभी साहित्यिक विधाएं सम्मिलित हो गईं हैं।

साहित्य और भाषा विज्ञान की तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि साहित्य और भाषाविज्ञान में बहुत बडा अन्तर है, परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि साहित्यिक भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन भाषाविज्ञान का ही दायित्व है। आधुनिक युग में साहित्यकारों की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करना सरल है परन्तु आदिकालीन और मध्ययुगीन साहित्यकारों की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करना कठिन है। फिर भी यह कार्य असम्भव नहीं है, क्यों कि इन कालों के साहित्यकारों की रचनाएं उपलब्ध हैं।, जिसके आधार पर उनकी भाषा का अध्ययन हो सकता है।

अतः भाषाविज्ञान और साहित्य का सम्बन्ध कितना गूढ है इसे जानना अत्यन्त आवश्यक है।

1. साहित्य और भाषा विज्ञान

साहित्य में भाषा का स्वरूप उपलब्ध होता हे। साहित्य में ही हमें भाषा का यथार्थ रूप प्राप्त होता हे। भाषा विज्ञान का आधार तो वास्तव में साहित्य ही है। अगर किसी भाषा का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो उसके लिए भी साहित्य ही आवश्यक सामग्री जुटा सकता है। केवल साहित्य से ही पता चलता है कि किस भाषा में कैसे और कब परिवर्तन हुआ और भाषा विशेष का कैसे कैसे विकास हुआ।

खडी बोली के रूप गत, अर्थगत, ध्वनिगत, आदि परिवर्तनों को जानना चाहते है ंतो हमें वैदिक भाषा आदि प्राकृत अपभ्रंश आदि भाषाओं के विकास क्रम का अध्ययन करना होगा।इसके अतिरिक्त भाषाओं के पारिवारिक सम्बन्धों का पता हमें साहित्य से ही मिलता है। साहित्य से ही ध्वनि परिवर्तन के कारणों को जानने में हमारी सहायता करता हैं। केवल इतना ही नहीं साहित्य को आधार बनाकर हम अर्थ परिवर्तन के विभिन्न कारणों तथा उनकी दिशाओं को भी जान सकते हैं। अतः स्पष्ट है कि साहित्य का अध्ययन भाषा विज्ञान के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

विश्व का प्राचीनतम साहित्य वेद माने जाते हैं। सम्भवतः प्रारम्भ काल तक लिपि का विकास नहीं हुआ था। धीरे–धीरे लिपि का विकास हुआ और उसमें विकास तथा परिवर्तन एवं परिवर्धन भी हुआ जिससे अनेक भाषाओं का विकास हुआ। प्राचीन साहित्य का बडा भाग आज लुप्त हो चुका हे। परन्तु जब से आधुनिक भाषा विज्ञान का प्रादुर्भव हुआ है तब से विभिन्न भाषाओं, ध्वनियो और शब्दों का वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन होने लगा। अनेक भाषाएं प्रकट हुईं। भाषा विज्ञान में स्वन विज्ञान, शब्द विज्ञान, रूपविज्ञान, अर्थविज्ञान, लिपि विज्ञान आदि कुछ शाखाएं हैं। इनहें भाषा विज्ञान का अंग भी कहा जा सकता हे। ये सभी शाखाएं साहित्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन करने में सहायक ं हैं।

2. साहित्य और ध्वनिविज्ञान

भाषाविज्ञान का अत्यन्त महत्व पूर्ण अंग ध्वनिविज्ञान को माना जाता हैं। भाषा विज्ञान की इस शाखा के द्वारा विभिनन भाषाओं की ध्वनियों का ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन होता है। साहित्यिक भाषा की विभिन्न ध्वनियों, ध्वनिगुणों, उनकी सार्थकता ,ध्वनियों में होने वाले परिवर्तन तथा उनके कारणों का वैज्ञानिक अध्ययन हो सकता है । भाषा के लुप्त होने अथवा भाषा में भारी बदलाव होने पर हमें उसके कारणों को जानने के लिए ध्वनिविज्ञान की ही सहायता लेनी पडेगी। वैदिक संस्कृत से आज तक भाषा में कितने, कैसे और क्यों परिवर्तन हुए इन प्रश्नों का उत्तर केवल हमें ध्वनि विज्ञान ही दे सकता है। इसी तरह कालिदास बाणभट्ट आदि की भाषा का अध्ययन करने हेतु भविष्य में ध्वनिविज्ञान सहायता कर सकता है। इसी तरह विदेशी भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन में भी ध्वनि विज्ञान की महत्व पूर्ण भूमिका हो सकती है।

3. साहित्य अध्ययन और शब्द विज्ञान

शब्द विज्ञान भाषा विज्ञान की महत्वपूर्ण शाखा है। शब्द भाषा की लघुतम इकाई है। शब्द अपने आप में सार्थक होते है परन्तु किसी भी शब्द की ध्वनियां निरर्थक होतीं हैं। वास्तव में शब्द विज्ञान भाषा विज्ञान के अध्ययन में मुख्य भूमिका निभा सकता है। शब्द विज्ञान में किसी भाषा की उत्पत्ति उसमें प्रयुक्त शब्दों की उत्पत्ति, उनके आगम, लोप परिवर्तन तथा अर्थ परिवर्तन का समुचित ज्ञान हो सकता है। संस्कृत के अनेक शब्द पाली, प्राकृत अपभ्रंश आदि भाषाओं में परिवर्तित होकर खडी बोली में प्रयुक्त होने लगे हैं। शब्द विज्ञानके द्वाराभाषा में उत्तरोत्तर किस प्रकार परिवर्तन हो रहे हैं इसका ज्ञान हो जाता है। इसी प्रकार अर्थपरिवर्तन को भी जाना जा सकता है। सर्प शब्द, तेलप्रवीण शब्द किस प्रकार अर्थ विस्तार पा गए अथवा किसी शब्द विशेष के लिए रूढ हो गए यह सब भाषा विज्ञान की अनेक शाखाओं से ज्ञान होता है।

शब्द विज्ञान की सहायता से हमें पता चलता है कि लौकिक संस्कृत में द्राविड तथा फारसी भाषा के अनेक शब्द स्थान पा चुके थे। इस तरह शब्द विज्ञान के प्रयोग से ही प्राचीन और आधुनिक भाषाओं के शब्दों तथा उनके अर्थ परिवर्तन का हमें पर्याप्त ज्ञान हो जाता है । भाषा विज्ञान के द्वारा ही हम जान पाए है कि कौन सी भाषा किस परिवार से सम्बन्ध रखती है। ज्ञान होने पर परस्पर सांस्कृतिक एकता में भी भाषा विज्ञान महत्व पूर्ण भूमिका निभाता है। उपसर्ग और प्रत्ययों के मेल से आज अनेक शब्दों का निर्माण हो रहा है भविष्य में केवल भाषा विज्ञान के द्वारा ही हम उस शब्द की व्युत्पत्ति को जान सकेंगें।

4. साहित्य अध्ययन में रूप विज्ञान की आवश्यकता

रूप विज्ञान भाषा विज्ञान की एक अन्य इकाई है। इसे भाषा विज्ञान की लघुतम इकाई भी कहा जाता है। रूप को ही हम पद कहते हैं। रूप व्याकरण के नियमो में बंध कर ही वाक्य में प्रयुक्त होते हैं। भाषा भारतीय हो या विदेशी सभी भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करने के लिए रूप विज्ञान सर्वाधिक उपयोगी माना जाता हें। कविप्रायः रचना करते हुए वैयाकरणिक नियमों की अवहेलना कर जाते हैं, विशेषतः विदेशी भाषाओं में ऐसा अधिक देखने को मिलता है। ऐसी भ्रम की स्थिति में भाषा विज्ञान के द्वारा ही भाषा के क्रमिक विकास की वास्तविकता को जाना जा सकता है तथा वहां रूप विज्ञान महत्व पूर्ण भूमिका निभाता है।

जब भी किसी भाषा में परिवर्तन होता है तो उसके क्रियारूपों और शब्द रूपों में परिवर्तन आता है। रूप विज्ञान की सहायता से उनके सही अर्थ को जान सकते हैं। संस्कृत, पाली, अपभ्रंश आदि के शब्दों के अर्थ हम क्रमिक विकास से जान सकते हैं। रूप विज्ञान की सहायता से हम भाषा विशेष के रूप परिवर्तन के नियमों को जान सकते हैं और उनमे आए परिवर्तनों को भी समझा सकते हैं।

5. साहित्य और वाक्यविज्ञान– वाक्य भाषा की सार्थक इकाई है। इस संदर्भ में अनेक विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

डॉ देवेन्द्र नाथ शर्मा के अनुसार– भाषा की पूर्णतया सार्थक इकाई वाक्य है।

डॉ भोला नाथ तिवारी के अनुसार–वाक्य भाषा की सहज इकाई है, जिसमें एक या अधिक शब्द हों, जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण या अपूर्ण व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में अवश्य पूर्ण होती है। साथ ही परोक्ष रूप से कम से कम एक क्रिया का भाव अवश्य होता है। साहित्यकार व्याकरण के नियमों का उल्लंघन करता रहता है क्योकि उसक सामने भाव और छन्द के बीच किसी एक को ही चुनने का विकल्प होता है जो प्रायः हर समय नहीं कभी कभी ही होता है पर होता तो है। इस तरह साहित्यकार अपने ही प्रकार के वाक्यों का निर्माण करता है। यही कारण है कि हमें प्राचीन काल की भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करने मे कुछ कठिनाइयां

उपस्थित होतीं हैं। परन्तु वाक्य विज्ञान का सहयोग लेकर इस दिशा में काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए संस्कृत एक संश्लिष्ट योगात्मक भाषा है। इसलिए संस्कृत की वाक्य रचना काफी क्लिष्ट है। वाक्य विज्ञान से मदद लेकर संस्कृत की वाक्य रचना का विवेचन और विश्लेषण कर सकते हैं।

6. साहित्य और अर्थ विज्ञान

अर्थ विज्ञान भाषा विज्ञान की एक और महत्व पूर्ण शाखा है। अर्थ वास्तव में भाषा की आत्मा होता है क्योंकि अर्थ के बिना भाषा का कोई अस्तित्व नहीं है। महाकवि कालीदास ने भाषा और उसके अर्थ की तुलना शिव और पार्वती के साथ की है। अर्थ विज्ञान के अन्तर्गत अर्थबोध, अर्थ कास्वरूप, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध,अर्थ परिवर्तनों के कारणों तथा दिशाओं पर चिंतन किया जाता है। वैदिक काल में अनेक शब्दों के अर्थ आज की भाषा में भिन्न अर्थ रखते हैं कहीं तो अर्थ का विलोम भी मिलता है। अर्थ परिवर्तन के कारण ही हम साहित्य में प्रयुक्त किए गए प्राचीन शब्दों के सही अर्थ को समझ नहीं पाते। असुर शब्द वैदिक संस्कृत में देवता के लिए प्रयुक्त होता था परन्तु आगे चल कर लैकिक संस्कृत में इस शब्द का प्रयोग राक्षस के लिए होने लगा। इस तरह अर्थ संकोच, अर्थादेश, अर्थोत्कर्ष, अर्थापकर्ष मूर्तिकरण, अमूर्तिकरण आदि के कारण अर्थ परिवर्तन का अध्ययन करके हम साहित्य को लाभ पहुंचा सकते हैं।

7. साहित्य और लिपि विज्ञान

इतिहास के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्राचीन काल में भी असंख्य लिपियां थीं। उनमें से अधिकांश लिपियां आज उपलब्ध नहीं हैं। जो भी उपलब्ध हैं वे पढी नहीं जा सकतीं। मोहन जोदडों और हडप्पा से प्राप्त चित्रलिपि के नमूने इसी तथ्य को स्पष्ट करते हैं। बाद में भी कुछ एंसी ही लिपियों का विकास हुआ, जो आज लुप्त हो चुकीं है। प्राचीन काल से मौखिक और लिखित दोनों प्रकार की भाषाएं प्रचलित रही हैं, परन्तु अधिकांश भाषाओं की लिपियां, रूपिमों, ध्वनियों, शब्दों आदि को जानने में आज हम असमर्थ हैं परन्तु लिपि विज्ञान की शाखा से हम कुछ भाषाओं और उनके साहित्य का अध्ययन कर सकते हैं। इसी तरह उनका काल निर्धारण भी कर सकते हैं। फिर भी लिपि विज्ञान की कुछ सीमाएं भी हैं। केवल लिपि विज्ञान द्वारा किसी साहित्य का अध्ययन करना असम्भव हैं इसके लिए हमें भाषा विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की सहायता लेनी होगी।

इस तरह साहित्य और भाषा विज्ञान अन्योन्याश्रित हैं। एक दूसरे के दोनो पूरक हैं। यह सत्य है कि भाषा विज्ञान में स्वनिमों, रूपिमों, शब्दों, वाक्यों, आदि का अध्ययन होता है, परन्तु भाषा विज्ञान साहित्य से ही सामग्री प्राप्त करता है। इसी प्रकार साहित्य के अध्ययन में भी भाषा विज्ञान की सहायता ली जा सकती हैं।अतः साहित्य और भाषा विज्ञान का सम्बन्ध अटूट है, प्रत्येक साहित्य कार को भाषा विज्ञान के अध्ययन में अभिरुचि होना आवश्यक है।

8. सन्दर्भसूचि

1. डॉ श्याम सुन्दर दास भाषा विज्ञान पृ78
2. डॉ देवी शंकर द्विवेदी भाषा और भाषिकी पृ134
3. डॉ भोला नाथ तिवारी भाषा विज्ञान पृ86
4. डॉ मंगलदेव शास्त्री तुलनात्मक भाषा शास्त्र पृ67
5. डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना भाषा विज्ञान के सिद्धान्त और हिंदी भाषापृ 123
6. आचार्य विश्वानाथ साहित्य दर्पण पृ67